अनुदानों की मांगें--जारी

DEMANDS FOR GRANTS—*Contd.*

वैदेशिक कार्य-मंत्रालय--जारी

प्रधान मंत्री, वैदेशिक-कार्य मंत्री तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू) : आज हमारे सामने बहुत पेचीदा मामले हैं जिनको सुलझाने के लिये यह जरूरी है कि हम उन पर गैर जज्बाती ढंग से विचार करें। आचार्य कृपालानी ने तिब्बत का फिर जिक्र किया, मगर इस बारे में कई बार सदन में चर्चा हो चुकी है, और इसके अलावा हमें स्थिति में जो परिवर्तन आ चुके हैं उन्हीं के अनुसार विचार करना है, पुराने ढंग से नहीं ।

आचार्य कृपालानी का मुख्य प्रस्ताव यह था कि हम गुटों से अलग रहने की नीति को छोड़ दें । परन्तु गुटों से अलग रहने की नीति हमारी या किसी और देश की आधारभूत नीति नहीं है । इस नीति को हमने इसलिये अपनाया कि हम स्वतन्त्र रूप से सोच सकें और स्वतन्त्र रूप से काम कर सकें । संसार में दो बड़े गुट हैं : एक अमरीकी और दूसरा रूसी, जिनके एक दूसरे के प्रति रुख में काफी परिवर्तन आ चुका है । रूस और अमरीका एक दूसरे के करीब आ रहे हैं । चीन और रूस जो एक ही गुट के देश थे एक दूसरे से दूर होते चले जा रहे हैं । इसी तरह पश्चिमी देशों के गुट में भी पहले की सी एकता नहीं रही । इसके साथ ही साथ बहुत से अन्य देशों ने स्वतन्त्रता प्राप्त की हैं जो गुटों से अलग रहने की नीति का अनुसरण करते हैं । मैं तो यह समझता हूं कि गुटों से अलग रहने की नीति को अपनाना आज और भी जरूरी है। किसी एक गुट में शामिल हो जाने का मतलब यह होगा कि हम न चाहते हुए भी उस गुट के दृष्टिकोण और नीति को अपनी नीति, और दृष्टिकोण बनायें, जो हम कदापि नहीं चाहते । इसके अलावा आज संसार के नये स्वतन्त्र देशों की प्रवृत्ति गुटों से अलग रहने की है और हम नहीं चाहते कि किसी गुट में शामिल हो कर इन देशों के साथ सम्बन्ध तोड़े जायें । जैसा कि सभा को ज्ञात है इस वर्ष के अन्त में तटस्थ देशों का एक सम्मेलन हो रहा है जिसमें हम शामिल हो रहे हैं । चीन और रूस में आपसी मतभेद हैं और चीन के भारत पर आक्रमण की रूस की ओर से निन्दा की गयी है ।

हमारा जो हाकी खेलने वाला दल काबुल गया था उसके बारे में श्री नाथ पाई ने काफी आलोचना की है मगर मैं स्पष्ट कर दूं कि हमारे दल के जशन के अवसर पर अफगानिस्तान जाने पर वहां के लोग बहुत खुश हुए हैं ।

कुछ माननीय सदस्यों ने कहा कि अपने पड़ोसी देशों, पाकिस्तान व चीन, के प्रति हमारी नीति उनको खुश करने की है और उनके सामने झुक जाने की है । मुझे यह सुन कर आश्चर्य हुआ । शक्ति का प्रदर्शन ऊंचे ऊंचे नारे लगा कर नहीं किया जाता । इसके अलावा हम चाहते हैं कि इन देशों से हमारे सम्बन्ध अच्छे हों । हम चाहते हैं कि जो समस्यायें हैं उनको शान्तिपूर्वक ढंग से बातचीत द्वारा सुलझाया जाय । चूंकि सिवाय इसके और कोई रास्ता नहीं है कि हम इन देशों के साथ शान्ति से रहें । आबादी के तबादले की समस्या को हल नहीं किया जा सकता । उससे दोनों देशों में शत्रुता बढ़ेगी । मैं समझता हूं कि पाकिस्तान और चीन दोनों के इरादे भारत के लिये बहुत खतरनाक हैं, मगर वह अपने इरादों में कामयाब नहीं हो सकते । हमें स्थिति का मुकाबला करना होगा । शान्तिपूर्वक बातचीत द्वारा आपसी समस्याओं को हल करना चाहिये मगर जो फैसला किया जाय वह हमारे देश के सम्मान और अखण्डता के हित से ही होना चाहिये ।

चीन के बारे में हमारी स्थिति स्पष्ट है कि जब तक वह कोलम्बो प्रस्तावों को पूरे तौर पर स्वीकार नहीं करेंगे हम उनके साथ बातचीत नहीं करेंगे। श्रीमती भंडारनायके ने अपने पत्र में कहा था कि यदि चीन लद्दाख के विसैन्यीकृत क्षेत्र से अपनी सभी चौकियां हटा ले तो क्या उसे कोलम्बो प्रस्तावों को पूरे तौर पर मानना समझा जायेगा। कोलम्बो प्रस्तावों के अनुसार उस क्षेत्र में दोनों देश परस्पर समझौते द्वारा अपनी अपनी चौकियां स्थापित कर सकते हैं। परन्तु यदि दोनों देश इस पर सहमत हो जायें कि किसी की कोई चौकी वहां पर न हो तो इसमें हमें कोई आपत्ति नहीं है। इसलिये हमने बता दिया था कि यदि चीन की ओर से कोई ऐसा प्रस्ताव रखा जाये तो हम उस पर विचार करेंगे। चूंकि चीन द्वारा ऐसी कार्यवाही नहीं की गयी, इसलिये स्थिति पहले के समान बनी हुई है।

आचार्य रंगा ने इस बारे में आपत्ति उठायी है कि हम जकार्ता सम्मेलन में भाग ले रहे हैं, चूंकि चीन भी उसमें भाग ले रहा है। परन्तु मैं इस तर्क से सहमत नहीं हूं। चूंकि चीन किसी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेता है, इसलिये हम उस सम्मेलन का बाईकाट नहीं कर सकते। इसमें हमारा अन्य देशों के सामने अपने दृष्टिकोण के रखे जाने का सवाल है और अन्य देशों से अपने सम्बन्धों का भी सवाल है। इस सम्मेलन में भाग लेने के बारे में हमारी एक राय रही है। केवल यही सोचना था कि किस व्यक्ति को वहां पर भेजा जाय।

हमें बहुत दुःख है कि पाकिस्तान के साथ शत्रुता और घृणा बराबर बनी हुई हैं। हम चाहते हैं कि पाकिस्तान के साथ शान्ति से हम रहें, परन्तु कब ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। मैं समझता हूं कि काश्मीर के मामले के हल हो जाने पर वातावरण में सुधार नहीं होगा। यह वातावरण घृणा और भय को दूर करने से ही ठीक हो सकता है।

चीन की पाकिस्तान के साथ मित्रता हो जाने से पाकिस्तान और भी बिगड़ गया है। उन दोनों के इरादे भारत के लिये अच्छे नहीं हो सकते। सब से असाधारण बात यह है कि कुछ पश्चिमी देश पाकिस्तान का साथ दे रहे हैं काश्मीर के मामले में। यदि पश्चिमी देश हस्तक्षेप न करते तो यह मामला बहुत पहले हल हो चुका होता। परन्तु काश्मीर के बारे में हमारी नीति स्पष्ट है।

शेख अब्दुल्ला की रिहाई के पश्चात् जो वक्तव्य दिये हैं वह दुर्भाग्यपूर्ण है। मुझे बताया गया है कि समाचार पत्रों की खबरें भी ठीक नहीं हैं। इसलिये मैं शेख अब्दुल्ला के मिलने पर ही इस बारे में चर्चा करूंगा। श्री मुकर्जी ने ईराक के राष्ट्रपति आरेफ के भारत में पाकिस्तानी विमान द्वारा आने पर रोष प्रकट किया। परन्तु हमने अपने विमान का प्रस्ताव किया था जिस पर हमें यह बताया गया था कि वह पाकिस्तान का प्रस्ताव स्वीकार कर चुके हैं।

श्री कृपालानी समझते हैं कि कोलम्बो प्रस्ताव हमारे लिये हितकर नहीं हैं और कि हमें अपने देश की रक्षा एवं चीन से मुकाबला करने का काम विदेशियों के हाथों में सौंप कर अपनी स्वतन्त्रता का त्याग कर देना चाहिए। परन्तु यदि उन्होंने अमरीका तथा ब्रिटेन में प्रकाशित भारत चीन विवाद पर टिप्पण पढ़े हों तो उनकी विचार धारा भिन्न होगी।

अमरीकी नौसेना के सातवें बेड़े के हिन्द महासागर में प्रवेश के बारे में भी आलोचना की गयी। परन्तु जहां तक हमें मालूम है वह बेड़ा शायद अफ्रीका जायेगा और वह हिन्द महा सागर में हमारे समुद्रीय राज्य क्षेत्र के सैकड़ों मील तक भी पास न आये। इसलिये हम ने यह तो कह दिया है कि हम नहीं चाहते कि परमाणु अस्त्रों से लैस यह बेड़ा भारत के निकट आये, परन्तु इसके अलावा कोई कार्यवाही करना वांछनीय नहीं है।

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

पूर्वी पाकिस्तान से बड़ी संख्या में अल्पसंख्यक भारत आ रहे है मगर मैंने देखा है कि कई निराधार खबरे समाचार पत्रों में छपती हैं जिनके परिणाम बुरे होते हैं। एक खबर यह छपी थी कि पूर्वी बंगाल से कुछ स्त्रियां अरब देशों में ले जाकर बेची गई। यह खबर बिल्कुल गलत है। अरब देशों ने भी इस विषय में रोष प्रकट किया है कि भारत में ऐसी निराधार खबरे फैलती हैं। इसलिये यह आवश्यक है कि हम इन बातों में सावधानी बरतें।

श्री नाथ पाई (राजापुर): यह बात इस कारण फैली चूंकि सरकार द्वारा उसी समय इस खबर का खंडन नहीं किया गया।

श्री हेम बरुआ (गोहाटी) : इस मामले की जांच करने में सरकार ने १६ दिन लगाये।

श्री फ्रैंक एन्थनी (नामनिर्देशित आंग्लभारतीय) : स्वयं सरकार के मंत्री ही ऐसी खबरों के लिये उत्तरदायी हैं। स्वयं सूचना तथा प्रसारण मंत्री ने मुझे ऐसी कहानी सुनाई थी।

श्री हरि विष्णु कामत (होशंगाबाद) : पुनर्वास मंत्री ने कहा था कि पाकिस्तान में कोई भी बच्चा या स्त्री सुरक्षित नहीं है।

निर्माण, आवास तथा पुनर्वास मंत्री (श्री मेहर चन्द खन्ना): मैंने तो यह कहा था कि जब मैं गारो पहाड़ियों में और माना में गया तो मुझे ऐसी खबरे सुनाई गई थीं। (**अन्तर्बाधायें**)

श्री जवाहरलाल नेहरू : पूर्वी पाकिस्तान में जो कुछ हुआ उसका हमें दुःख है और हमें वहां से आने वालों की हर संभव तरीके से सहायता करनी है मगर जो कुछ कलकत्ता, उड़ीसा एवं बिहार में हुआ वह भी बहुत शर्मनाक था। हमें ऐसी घटनाओं को रोकना है अन्यथा हम वही करेंगे जो पाकिस्तान चाहता है। पाकिस्तान चाहता है कि हम धर्मनिरपेक्षता की नीति का त्याग करें ताकि वह अपनी नीति को ठीक साबित कर सके। यदि आज गांधी जी जीवित होते तो वह हमें कोई ऐसी कार्यवाही न करने देते जिससे मित्रता एवं शान्ति भंग हो। हमें इस अन्तिम उद्देश्य को सामने रखना है कि हमें पाकिस्तान के साथ शान्ति एवं मित्रता का वातावरण पैदा करना है। इसलिये हमें कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिये जिससे इस उद्देश्य की पूर्ति में बाधा पड़े।

मैं तो यह आशा करता था कि पाकिस्तान और भारत सांवैधानिक दृष्टि से एक दूसरे के निकट आ जायें परन्तु मैं ऐसी बात नहीं कह सकता चूंकि पाकिस्तान इस को पसन्द नहीं करता। इसके सिवाय और कोई चारा नहीं है कि भारत और पाकिस्तान मित्रता से रहें। हो सकता है ऐसा वातावरण पैदा होने में काफी समय लगे। जो नई सन्तान है पाकिस्तान की वह अलग दृष्टिकोण रखती है। उनकी विचारधारा पुरानी नहीं है। पूर्वी पाकिस्तान में पुराने तरीकों के विरुद्ध आन्दोलन भी हुए हैं। शायद इसी कारण पाकिस्तान ने पूर्वी बंगाल में ऐसी घटनाओं को प्रोत्साहन दिया है ताकि वहां पर जो नवीन विचारधारा है वह पनपने न पाये।

मुझे आशा है कि गृह मंत्रियों का जो सम्मेलन होगा उस में समस्या का हल निकाला जायगा और तनाव कम होगा। मेरी धारणा यह है कि पाकिस्तान के गृह मंत्री इस समस्या के हल करने के बारे में बहुत तत्पर हैं।

मुझे आशा है कि सभा महसूस करती है कि भारत और पाकिस्तान की समस्यायें गुस्से से नहीं वरन् मित्रतापूर्वक ही हल की जा सकती हैं।

श्री हरि विष्णु कामत : किन्तु वह हमारे साथ सहयोग नहीं करता और हमारी मित्रता को भी नहीं मानता । यही कठिनाई है ।

श्री जवाहरलाल नेहरू : वह हमारे साथ सहयोग नहीं करता और वह हमारी पेशकश का ठीक उत्तर नहीं देता इसके बाद भी हम उन पर दबाव डाल रहे हैं कि वह ऐसा करें ।

श्री हेम बरुआ : उन पर आप कैसे दबाव डालेंगे ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : मनोवैज्ञानिक दबाव डालते हैं, अपने अच्छे प्रभाव का दबाव डालते हैं । वहां के लोगों के सद्व्यवहार को भी उनके सामने रखते हैं ।

श्री हेम बरुआ : सद्व्यवहार का हम से तो उन्होंने कुछ सबक सीखा नहीं, बल्कि हमारी शराफत को वह हमारी कमजोरी समझ रहे हैं ।

श्री जवाहरलाल नेहरू : पाकिस्तान के लोगों के लिये मेरे हृदय में आदर है । यही ठीक धार्मिक नारों से वे भड़क उठते हैं । वह तो कोई भी हो, हिन्दू हो, मुस्लिम हो भड़क उठेगा । वहां कुछ भी हो हमें यहां स्थिति ठीक रखनी है ।

चीन का मुकाबला हमें अपने को शक्तिशाली बना कर करना है । इस मामले में और कोई भी विदेशी शक्ति हमारी सहायता नहीं कर सकती । हमें किसी भ्रम में नहीं रहना चाहिए । साथ ही हमें यह भी समझ लेना चाहिए कि केवल चीन और पाकिस्तान ही भूल नहीं करता हम भी कर सकते हैं । हमें जोश में नहीं आना चाहिए । संयुक्त राष्ट्र संघ को पाकिस्तानी घुसपैठ की शिकायतें वैसे ही मिली हैं । परन्तु बहुसंख्या में घुसपैठ पाकिस्तान की ओर से ही हुए हैं और इस मामले में संयुक्त राष्ट्र संघ वालों का निर्णय हमारे पक्ष में है और पाकिस्तान के विरुद्ध । कुछ ऐसे भी मामले हैं यहां पर निर्णय हमारे विरुद्ध गया है ।

श्री हेम बरुआ : तो उसके बारे में हमें विवरण मिलना चाहिए ।

श्री जवाहरलाल नेहरू : कठिनाई यह है कि हम यह समझने लग गये हैं कि हम सच्चे हैं, और यह बात हमारे सबसे अधिक विरुद्ध जाती है ।

श्री नाथ पाई : मेरा कटौती प्रस्ताव संख्या ७७ अलग से प्रस्तुत किया जाय ।

अध्यक्ष महोदय द्वारा कटौती प्रस्ताव संख्या ७७ मतदान के लिए रखा गया ।

लोक सभा में मत विभाजन हुआ : पक्ष में ३५: विपक्ष में १९३ ।

Lok Sabha divided

Ayes : 35 ; Noes 193

प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ ।

The motion was negatived.